नाम : सार्थक दुबे
उम्र : 10
गांव : नरेन्द्रपुर

PARIVARTAN
परिवर्तन

TAKSHILA
तक्षशिला

चहकने की ललक

अंक – छब्बीस
अप्रैल 2024 – जुलाई 2024

ग्राम : नरेन्द्रपुर, प्रखंड : जीरादेई
जिला : सिवान, बिहार
दूरभाष : +91 8434170118

बाल संवाद

प्यारे दोस्तों,
मैं हूँ चहकने की ललक । इस अंक 26 में बाल लेखको ने मेरे बारे में बहुत अच्छा लिखा है कि मुझसे मिलने के बाद इन बाल लेखकों में काफी कुछ बदलाव हुआ है । इस बार तो मेरे प्यारे लेखकों ने मुझे खुद से तैयार किया है। सर्वप्रथम 2014 में मुझे प्रकाशित किया गया था । जिसमें मेरे बाल-लेखकों ने अपनी रचना को प्रदर्शित किया था । इस दरमियां उन्हें बेहद खुशी हुई और लगातार मेरे लिये अपनी रचनाओं को लिखते रहे । आशा करती हूँ कि आगे भी ऐसे ही अच्छा लिखें। यह परिवर्तन बाल-अखबार है । जहाँ बच्चे अपनी कला को दिखाने कोशिश करते हैं ।

आपका साथी
चहकने की ललक
अंक 26

नाम : संजना कुमारी
गांव : नरेन्द्रपुर
उम्र : 11
पिता : संजय शाह

पहेलियां

1. वह क्या है जो उल्टा करने पर कम हो जाता है?
2. वह क्या है जो हक बढ़ती ही जाती है कभी घटती नहीं?
3. एक बार भोजन करें तो, भरपेट तुम्हें खिलाऊँ।
   अगर दोबारा मुझको चाहो तो काम नहीं मैं आऊँ।
4. क्या है जिससे आग नही लगती फिर भी उसे बुझाना पडता हैं ।

नाम पल्लवी कुमारी,
गांव संथू, उम्र 11

उत्तर: 1. नम्बर 2. उम्र 3. पत्तल 4. प्यास

कविता

जिसने सुरज चांद बनाया।
जिसने तारों को चमकाया।
जिसने फूलों को महकाया।
जिसने चिड़ियों को चेहकाया।
जिसने सारा जगत बनाया।
जिसने रची हमारी काया।
हम उस ईश्वर के गुण गाएँ।
उसे प्रेम से शीश झुकाएँ।

नाम : शिशु कुमारी
वर्ग : 1, गांव : बंधू सलोना

परीक्षा

आज मैं अपने विद्यालय गई थी। मेरे शिक्षक महोदय ने कहा कल साप्ताहिक परीक्षा है मुझे सुनकर बहुत अच्छा लगा। लेकिन मेरे दोस्त परीक्षा का नाम सुनकर डर गए। मैंने उन्हें समझाया कि तुम लोग डरो मत ऐसा डर सबके मन में होता है। मेरे साथ भी हुआ था। लेकिन उस डर से लड़कर आगे बढ़ने की कोशिश की फिर मेरी दोस्त पल्लवी, शिक्षा और खुशी ने पूछी कैसे फिर मैंने उनलोगों को बताया की जो पाठ विद्यालय में पढ़ाई हो जाती है या जो भी पढ़ाई हो उसे घर पर दोबारा दोहराया जाता है। मैंने उन सब नियमों का पालन किया फिर मैं धीरे-धीरे तेज होती गई। जिसके वजह से ना तो मुझे पढ़ाई या परीक्षा से डर नहीं लगता है। फिर दोस्त पूछी यह सब तुमको कौन बताया फिर मैं बताई मेरे विद्यालय के वृजकिशोर सर ये बातों को रोज प्रार्थना के वक्त बताते हैं। इन बातों को सुनकर सीख मिली जिससे आज मैं परीक्षा के नाम सुनकर नही डरती हूँ बल्कि बहुत खुश होती हूँ।

नाम : मधु यादव
विद्यालय : म. वि. बेल्ही पूरब
वर्ग : 8

नाम : नंदनी कुमारी
पिता : संजय शाह
गांव : नरेन्द्रपुर

कविता

फल फूलों से लदा बगीचा, अच्छा लगता सदा बगीचा। गर्मी आई आम पकेंगे, कई तरह के स्वाद चखेंगे माली भैया कर लो वादा, हमको देना सबसे ज्यादा।

नाम : आर्यन कुमार
गांव : नारायणपुर
उम्र : 8

नाम : समर दुबे
गांव : नरेन्द्रपुर
उम्र : 12 वर्ष

नाम : प्रियम कुमार
गांव : मियाँ के भटकन
उम्र : 10
पिता: तारकेशवर साह

शिक्षकों की कलम से

परीक्षा का डर

ना डारो की यह इम्तिहान है,
सच है कि यही आपकी पहचान है।
होता मूल्यांकन आपके ज्ञान का यहाँ,
फिर क्यों ये डर और क्यों मन परेशान है ।।

आपके उज्जवल भविष्य का ही देखा है हम शिक्षकों में यह सपना
कामयाबी हर क्षेत्र में मिले आपको
हर फतह पर हो नामकरण आपका
है आशा की एक लहर सी मन में,
करना है फतह क्यों हैरान है?

ना डारो की यह इम्तिहान है,
सच है कि यही आपकी पहचान है।
मिटा दो डर परीक्षा का, बढ़ाओ ज्ञान का भंडार
फिर लौटकर न आएगा, ये स्वप्न का जो है अंबर

मेहनत करो इतनी की गगन भी चुमने आए
कि धरती पर ये रौशनी कैसी क्यों जगमगाया
ना डरो कि ये इम्तिहान है,
सच है कि वही आपकी पहचान है।

नाम : सरिता सिंह
म. वि. बेल्ही पूरब

नाम : प्रीती कुमारी
गांव : नरेन्द्रपुर
उम्र : 12

गली के कुत्ते

हमारी गली के कुत्ते कभी कार से कभी बाइक के धक्के से घायल होते रहते हैं कमार टूट जाने से कोई सड़क पर घिसटता नजर आता है, तो कोई टाँग टूट जाने से कही, कोई कुत्ता कई घंटो करुण स्वर में रोता रहता है उसे रोज एक पिल्ले के लगातार रोने की आवाज हृदय को द्रवित कर गई क्योंकि वहां कड़ाके के ठंड में आश्रय के लिए इधर से उधर भटक रहा था। गली के कुत्तों को बहुत दर्द सहना पड़ता हैं।

नाम : राधा कुमारी
गांव : संथू
उम्र : 12

गली का कुत्ता

बहुत समय पहले की बात है । मेरे घर के बगल में कुत्ता रहता था उसके 6 बच्चे थे । एक दिन क्या हुआ कि उसके 4 बच्चे को सियार टाँगकर लेकर चला गया और बचे दो तो फिर और एक को सियार लेकर चला गया और एक बच्चे का पता नहीं कहां गया । उसके बाद वह कुतीया (माँ) का पता नही चला की कहाँ चली गई । लेकिन बड़ा दुःख की बात है कि वह कुतीया पर क्या बीता होगा । वह अपने 6 बेटे और बेटी को खो दी । फिर गली छोड़कर चली गई।

नाम : रागनी कुमारी
विद्यालय : म. वि. बेल्ही पूरब
वर्ग : 8

नाम : समर दुबे
गांव : नरेंद्रपुर, उम्र : 12

गली का कुत्ता

मेरे घर के बगल में एक कुत्ता रहता है और वह इतना खतरनाक है की वह रात को या दिन को कोई भी उसके आगे आ जाता है वह उसपर भौंकने लगता है । जिससे सब लोग परेशान और डरे रहते हैं । उसके आस-पास भी कोई नही जाता है । हमारे गली में तो बहुत कुत्ते हैं । मगर सबसे खतरनाक वही कुत्ता है । उस कुत्ते से तो उसके मालिक भी डरते हैं ।

नाम : प्रकाश कुमार
गांव : मियां के भटकन
उम्र : 12

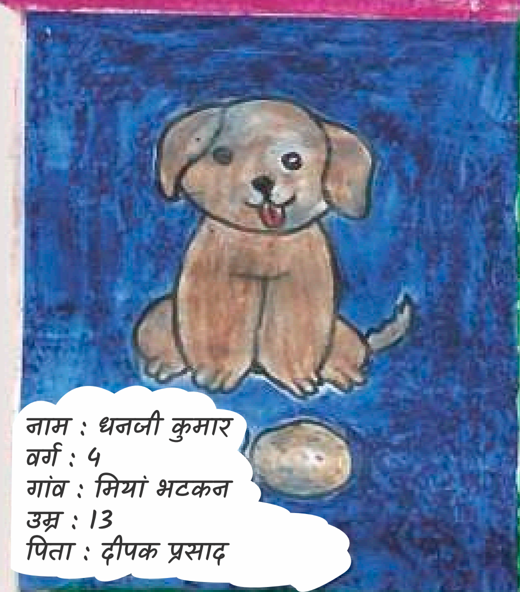

नाम : धनजी कुमार
वर्ग : 4
गांव : मियां भटकन
उम्र : 13
पिता : दीपक प्रसाद

नाम : रागिनी कुमारी
कक्षा : 7, रोल नंबर : 2
स्कूल : आर यू एम एस बेल्ही (पूरब)

मेला

पिंकी- हम सब घर पर कोई काम कर रहे थे तो मेरा भाई बोलता है अरे दीदी आज शाम को आंदर बाजार मे मेला लगेगा
आयुष- दीदी चलो मम्मी और पापा से पूछते हैं
पिंकी - भाई चलो पहले हम ही पूछेंगे मम्मी आपसे पूछना है पक्का आप मना मत करना
मम्मी- हां हां मेरे बच्चे आप सब के खुशी मे मेरी भी खुशी है क्या बात है
पिंकी- भाई भाई तुम मम्मी से बोलो ना
आयुष- नहीं नहीं तुम बोलो क्या सोच रहे हो
मम्मी- अरे तुम दोनों सोच रहे हो
पिंकी- मम्मी आज शाम को आंदर में मेला लगेगा प्लीज मना मत करना मम्मी प्लीज मेला ले चलो ना
मम्मी- ठीक है बच्चे आप सब नए कपड़े पहन लो हम चारों मेला चलेंगे
पिंकी- पापा आप तैयार नहीं हैं क्या
पापा- नहीं बच्चों हम तैयार हैं चलो हम सब चलते हैं
पिंकी- पापा हमको यह वाला झूला झूलना है
आयुष- मम्मी हमको जलेबी खाना है
मम्मी- चलो पिंकी झूला झूल लो तुम भी आयुष, दीदी के साथ पहले झूला झूलो फिर जलेबी खा लेना
आयुष- मम्मी आप जलेबी खाते हैं
मम्मी- हां मेरे प्यारे बच्चों पहले जलेबी के दुकान पर चलो तो
पिंकी - हम चारों जलेबी के दुकान पर वहीं जलेबी खाएं
आयुष- चलो आप खिलौने के दुकान पर मुझे गाड़ी चाहिए
पिंकी- और मुझे गुड़िया चाहिए
मम्मी- चलो अब खिलौना खरीदा गया अब घर चलते हैं
पिंकी- हां मम्मी हम दोनों का पैर भी दुख गया है अब घर भी आ गया है
मम्मी- अब तो तुम दोनों का सपना पूरा हो गया
पिंकी- हां मम्मी क्यों नहीं होगा सपना पूरा आप दोनों हम दोनों से प्यार करते हैं आप दोनों हमारे भगवान हैं

नाम : ज्योति कुमारी
विद्यालय : म. वि. बेल्ही पूरब
वर्ग : 8

नाम : रागनी कुमारी
गांव : नारायणपुर
वर्ग-8, उम्र : 12

मेला

एक दिन मैं अपनी मम्मी के साथ मेला गई थी । वहां जाकर मैं पहले झुला झुली और उसके बाद मैंने जलेबी, समोसा, चाउमिन चार्ट और आइसक्रीम खाई फिर मम्मी को भी खिलाई । मैं और मेरी मम्मी बहुत खुश थे और फिर हमें बहुत अच्छे- अच्छे समान खरीदकर घर को चल पड़े। फिर रास्ते में एक टेम्पू मिली जिसपर सवार होकर मैं और मम्मी घर आ गए । घर आए तो देखा की मेरी बहन सोई हुई थी । फिर मैं उसको उठाई और बोली देखो मैं तुम्हारे लिए जलेबी लाई हूं वह खाने लगी ।

नाम : पुतुल सिंह
विद्यालय : म. वि. बेल्ही पूरब
वर्ग : 8

चुटकुले

टीचर गोलू से - पांच में से पांच घटाने पर कितने बचेंगे ??
गोलू - 'पता नहीं मैडम ।'
टीचर - अगर तेरे पास 5 भटूरे है, और 5 भटूरे तुझसे मैं ले लूँ तो तेरे पास क्या बचेगा ??
गोलू - मैडम, छोले बचेंगे

नाम : आलोक कुमार
गांव : मियाँ के भटकन
उम्र : 12

नाम : नियति सिंह, उम्र : 12
स्कूल : आर यू एम एस बेल्ही (पूरब)

हमारा बगीचा

हमारा एक बहुत सुंदर बगीचा है और बगीचे में बहुत सारे सुंदर-सुंदर फूल हैं और उन फूल पे बहुत सारी तितलियां भी आती हैं और हमारे बगीचे में बहुत सारी पेड़ हैं एक आम पेड़ है जिसमें बहुत मीठे-मीठे आम फरते हैं । हमारे बगीचे में छोटे-छोटे घास भी हैं और मैं अपने बगीचे में बहुत घूमती हूँ और मेरे बगीचे में बहुत अच्छा लगता है।

नाम : चांदनी कुमारी
पिता : राम प्रकाश साह
गांव : मियाँ के भक्कन, उम्र : 12

नाम : शिवम साह
पिता : संजय साह
गांव : नरेंद्रपुर
उम्र : 7

मेरा बगीचा

मेरा बगीचा सबसे अच्छा है। मेरे बगीचे में 13 आम का पेड़ और जामुन का पेड़ है जो बहुत बड़ा है । आम के पेड़ पर चिड़िया घोसला बनाई है उसमें पाँच अण्डे दिए हैं मैं बगीचे मे बहुत सारा फुल भी लगाई हूँ मुझे अपने भाई-बहन और अपने दोस्तों के साथ खेलने मैं बहुत अच्छा लगता है । गर्मियों के दिनों में हम आम के पेड पर झूला बाँधकर झुला भी खेलते हैं और खुब सारा आम खाते हैं । कभी-कभी मेरे बगीचे में कबुतर और उनके बच्चें भी आते हैं जिसको देखकर बहुत अच्छा लगता है।

नाम : नव्या कुमारी
पिता : नागेंद्र यादव
गांव : नारायणपुर, उम्र : 10

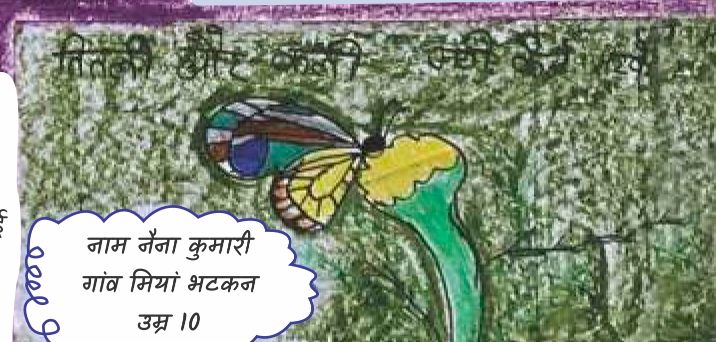

नाम नैना कुमारी
गांव मियां भटकन
उम्र 10

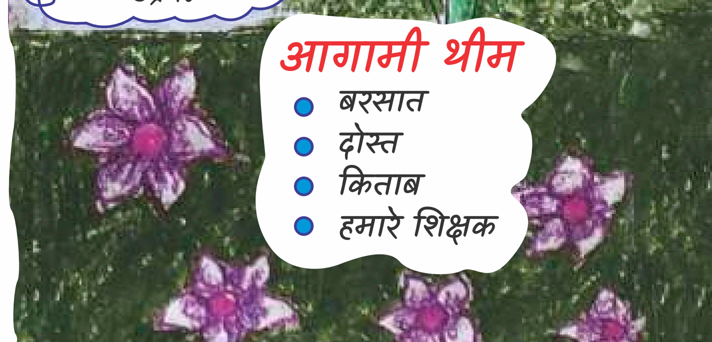

आगामी थीम

- बरसात
- दोस्त
- किताब
- हमारे शिक्षक

मेरा बगीचा

मेरा बगीचा बहुत ही रंग बिरंगा है मैं अपने बगीचे में तरह-तरह के पेड़-पौधे और फुल हूँ उसमें रोज पानी डालती हूँ और मिट्टी चढ़ाती हूँ उसका खुब सेवा करती हूँ और पेड़-पौधे से फुल और आम को तोड़ना बहुत अच्छा लगता है। हम सब बगीचे में खुब खेलते हैं । बहुत सारे लोग तो गर्मियों के दिनों में खटिया लाकर बगीचा में मोबाइल चलाते हैं और सो भी जाते है। गाय-भैंस पेड़ के नीचे बैठकर आराम करती है।

नाम : रागिनी कुमारी
पिता : अशरफी साह
गांव : छजवाँ बलिया

नाम : अनुराधा कुमारी
वर्ग : 7, गांव : खेम भटकन

नाम : वर्षा कुमारी
गांव : नारायणपुर
पिता : अजय पंडित
वर्ग : 7, उम्र : 12

परीक्षा

परीक्षा हम लोग का साल में दो बार होता है लेकिन परीक्षा नाम सुनकर ही पता नहीं क्यों घबराहट और डर-सा होने लगता है। क्या होगा, क्या सवाल आएंगे ये सोचने लग जाते हैं । कितना नंबर ला पाऊंगी । कम नंबर आने पर घर पे मम्मी-पापा से डाँट सुनना पड़ेगा । तरह-तरह की बातें मन में चलने लगती है । मैं परीक्षा देना नहीं चाहती हूँ इसके बदले हँसना, खेलना चाहती हूँ क्योंकि परीक्षा मुझे बोरिंग लगती है।

नाम : अमृता कुमारी
गांव : संधू
उम्र : 11